eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

संस्कृति का अर्थ एवं अवधारणा

[1]डॉ0 शालिनी त्रिपाठी
[1]एसोसिएट प्रोफेसर संगीत, डी0जी0पी0जी0 कालेज, कानपुर उ0प्र0।

Received: 08 May 2019, Accepted: 11 May 2019 ; Published on line: 15 May 2019

Abstract

युग–युगान्तर से पूर्वज पर्वत ध्रुव अचल खड़े हुए हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि मानो इनकी सभी इच्छायें पूर्ण हो गयी हैं और इन्हें कहीं आने–जाने की आवश्यकता नहीं रही, ये अजर और हरीतिमामय वृक्षों से परिपूर्ण हैं, और (पक्षियों के) मधुर रव से आकाश–पृथ्वी को मुखरित करते रहते हैं।

शब्द संक्षेप– संस्कृति, अर्थ, अवधारणा सभ्यता एवं प्रेरणा।

Introduction

भारतवर्ष के उत्तर में कश्मीर से अरूणाचल तक फैली लगभग 2400 कि0मी0 लम्बी तथा 250 से 350 किलोमीटर चौड़ी पर्वतश्रृंखला, भारतीय संस्कृति, सभ्यता एवं प्रेरणा का स्रोत है। भारत की नहीं अपितु विश्व में इसे हिमालय पर्वत के नाम से जाना जाता है। हिमालय हिमश्रृंखलाओं, वन एवं जल जैसे प्रकृति के जीवनोपयोगी संसाधनों का क्षेत्र रहा है। इसका महात्म्य पुराणों में विशेषतया वर्णित हैं, इसे शिव की वास भूमि कहा जाता है। इस भू–भाग के मध्य क्षेत्र को मध्य हिमालय या उत्तराखण्ड के नाम से जाना जाता है।

भारत एक विशिष्ट संस्कृति उत्तरांचल के निवासियों के विचारों की झाँकी प्रस्तुत करती है। सभी गृहसूत्रों में जनजीवन का चित्रण पाया जाता है। भिन्न–भिन्न संस्कारों के अवसरों पर उत्तरांचल के समाज में प्रचलित लोक विश्वास, मान्यतायें, परम्परायें तथा प्रथायें देखने को मिलती है। प्रागैतिहासिक कला एवं संस्कृति का रूप हमें आदि मानव के अवशेषों के रूप में मिलता है। वे अपनी जीवनकथा, आखेट के दृश्यों, वर्ण, संस्कारों एवं अन्य कर्मो को अपनी गुफा और घरों की दीवारों पर अंकित किया करते थे।

मूलतः संस्कृति और संस्कार दोनों ही शब्द समानार्थी है। वर्तमान में संस्कृति शब्द अंग्रेजी के 'कल्चर' शब्द का पर्याय माना जाता है। भारतवर्ष में ऋषि–मुनियों और धर्माचार्यो द्वारा अभीष्ट लक्ष्य की प्राप्ति हेतु मानव के परिष्कार के लिए जिस आचार व्यवहार का उपदेश दिया गया वह संस्कृति कहलाती है। अतः इस प्रकार हम कह सकते हैं कि संस्कृति और प्रकृति परस्पर सापेक्ष शब्द है। कहा जाता है कि प्राकृत जन शब्द का उपयोग महाभारत में साधारण मनुष्यों या ''मैन इन द स्ट्रीट'' के लिए हुआ है। अतः प्रकृति में और सहज सामान्यता में श्रेष्ठता का आधार संस्कार या संस्कृति है। विभिन्न प्रकार के आचार, व्यवहार, खान–पान, लोकगीत, धर्म, कला, दर्शन आदि संस्कृति के अन्तर्गत निहित होते है किन्तु यह व्यक्ति निष्ठ न होकर समूह द्वारा किया गया बौद्धिक प्रयास है। मानव

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

विभिन्न स्थानों में रहते हुए भी विशेष प्रकार के सामाजिक वातावरण, व्यवस्थाओं, संस्थाओं, दर्शन, धर्म, भाषा, लिपि तथा कलाओं का विकास करके अपनी संस्कृति का निर्माण करता है। इस प्रकार सामाजिक संस्कारों से संस्कृति विकसित होती है।''

''संस्कृति से तात्पर्यः ''संस्कृति'' शब्द संस्कृत ''कृ' (करना) धातु से सम् (सम्यक्) उपसर्ग और 'क्तिन' (स्त्री0) प्रत्यय के योग से निर्मित है। जिसका शाब्दिक अर्थ है– ''सम्यक् रूप से किया जाने वाला आचार–व्यवहार''। सामान्यतः बोलचाल में ''संस्कृति'' का अर्थ सुन्दर, रूचिकार, कल्याणकारी और परिष्कृत व्यवहार से लिया जाता है। अंग्रेजी में संस्कृति के पर्याय के रूप में Culture (कल्चर) शब्द प्रचलित है। संस्कृति या कल्चर केवल अपने शाब्दिक अर्थ तक ही संकुचित नहीं है। उसका अर्थ अत्यन्त व्यापक है।

रेडफील्ड – ''संस्कृति, कला और उपकरणों में प्रकट परम्परागत, ज्ञान का वह संगठित रूप है, जो परम्परा के द्वारा संरक्षित होकर मानव समूह की विशेषता बन जाता है।''

मैथ्यू आर्नल्ड ''संस्कृति का तात्पर्य उस सुन्दरतम् से अपने को भिज्ञ करना है, जो कुछ ज्ञात है और जो कुछ कहा गया है।''

अतः कहा जा सकता है कि परम्परा से प्राप्त किसी मानव समूह की निरन्तर उन्नत मानसिक अवस्था, उत्कृष्ट वैचारिक प्रक्रिया, व्यावहारिक शिष्टता, आचारगत पवित्रता, सौन्दर्याभिरूचि आदि की परिष्कृत, कलात्मक तथा सामूहिक अभिव्यक्ति ही संस्कृति है।

संस्कृति सम्पूर्ण समाज का प्रतिबिम्ब होती है। जन्मना कोई सुसंस्कृत नहीं होता, समाज ही व्यक्ति को सुसंस्कृत बनाता है। अतः संस्कृति अर्जन पर आधारित है। संस्कृति द्वारा ही किसी समाज की नैतिक और सामाजिक आवश्यकताओं की पूर्ति होती है। संस्कृति का स्वरूप समय–समय पर परिवर्तित होता रहता है। देश–काल की भिन्नता होने पर भी विभिन्न संस्कृतियों में कुछ न कुछ मूल–भूत आंतरिक एक्य की प्रवृत्ति पायी जाती है।

प्राचीन भारतीय साहित्य के अवलोकन से यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि वैदिक काल से ही इस देश में संस्कृति की दो पृथक–पृथक धाराएँ प्रवाहित हो रही है :–

(1) शिष्ट संस्कृति

(2) लोक संस्कृति

शिष्ट संस्कृति से हमारा तात्पर्य उस अभिजात वर्ण की संस्कृति से है जो कि बौद्धिक विकास के उच्चतम शिखर पर पहुँचा हुआ था, जो अपनी प्रतिमा के कारण समाज का अग्रणी और पथ प्रदर्शक था तथा जिसकी संस्कृति का स्रोत वेद या शास्त्र था। लोक–संस्कृति से हमारा अभिप्राय जनसाधारण की उस संस्कृति से है जो अपनी प्रेरणा लोक से प्राप्त करती थी, जिसकी उत्सभूमि जनता थी और बौद्धिक विकास के भिन्न धरातल पर उपस्थित थी।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

किसी भी प्रदेश की संस्कृति सामान्यतः उसकी जीवन पद्धति और जीवन–मूल्यों से परिभाषित होती है। संस्कृति एक ऐतिहासिक धरोहर या परम्परागत् उपलब्धि होती है जो वर्तमान को अतीत से जोड़ती है। आजकल संस्कृति का आधार भौतिक व्यवस्था है। परन्तु यह भौतिक व्यवस्था है। परन्तु यह भौतिक व्यवस्था संस्कृति का रूप निर्धारित नहीं कर सकती। उसका रूप निर्धारित होता है। आध्यत्मिक चिन्तन से तथा भौतिक परिस्थितियाँ संस्कृति पर कुछ प्रभाव अवश्य डालती हैं। मानव का जन्म प्रारम्भ तो जीवन का अन्तिम संस्कार होता है। मृत्यु संस्कार। मृत्युगीतों की एक प्राचीन परम्परा भारत में विद्यमान है। ऋग्वेद में ऐसे अनेक सूक्त मिलते हैं, जिनमें मृत व्यक्ति के सम्बन्ध में शोक प्रकट किया जाता है। इन गीतों में मृतक की आत्मका के लिए परलोक में शान्ति व सुख की कामना की जाती है।

मनोरंजन की प्रवृत्ति मानव की सहजात प्रवृत्ति है। इसके बिना वह जीवित नहीं रह सकता। मनोरंजन श्रम या काम से थके लोक मन से नवीन जीवन का संचार, नृत्य कला आदि की ओर प्रेरित होता है। वह मनोरंजन के लिए विभिन्न साधनों व आयोजनों का प्रबंध करता है। जिसके अन्तर्गत् पिछड़ी हुई जातियों में प्रचलित अवशिष्ट विश्वास, रीति–रिवाज, प्रकृति के चेतन तथा जड़ जगत् के सम्बन्ध में भूत–प्रेतों की दुनियाँ तथा उनके साथ मनुष्यों के सम्बन्धों में जादू–टोना, सम्मोहन, वशींकरण, ताबीज, भाग्य, शकुन, रोग तथा मृत्यु के सम्बन्ध में आदिम तथा असभ्य विश्वास इसके क्षेत्र में आते है। संक्षेप में लोक की मानसिक सम्पन्नता के अन्तर्गत जो वस्तु आ सकती है वे सभी संस्कृति के क्षेत्र में आती है।

हम भारतीय है। भारत एक विशाल देश है। इस देश की सांस्कृति आत्मा विभिन्न अंचलों में निवास करती है। अतः अंचलों की संस्कृति का एकीकृत एवं हमारी राष्ट्रीय संस्कृति का वास्तविक रूप है।''

''भारतीय संस्कृति, मैं समझता हूँ विश्रृंखल हो जाती यदि वह आंचलिक संस्कृतियों को नष्ट करने का दुराग्रह करती।''1

भारतीय संस्कृति, में आचरण या सदाचार को प्रमुख स्थान प्राप्त है परन्तु यहाँ दूसरों की अच्छाईयों का अपना लेने की परिपाटी रही है। उत्तरांचल में भी आचरण को ऊँचा स्थान दिया जाता है। भारतीय संस्कृति के ही समान यहाँ भी भोगो के त्याग को नहीं बल्कि भोगों में लिप्त होना वर्णित है। यहाँ उपनिषदों के इस उद्घोष को मान्यता प्राप्त है कि – कुर्वन्नेवेंह कर्माणि जिजीविषेच्छतं समाः (ईसावास्योपनिषद) अर्थात् उत्तरांचल में कर्म को विशेष महत्व देते हुए जीवन को कर्म से जोड़ा जाता है। यहाँ का मानव कर्मठ है। देश के लिए मर मिटना, देश प्रहरी बनकर सीमाओं में रहना यहाँ के पुरूष समाज की विशेषता है। कर्म को धर्म से जोड़कर उत्तरांचल निवासी आचरण करते हैं।

भारतीय संस्कृति आशावादी, सुख–दुख को समान स्थान देने वाली संस्कृति है, क्योंकि यहाँ ''चक्रववत्परिवर्तन्ते–सुख दुश विपर्ययोः'' को वेद वाक्य माना जाता है परन्तु उत्तरांचल के निवासियों (लोक मानवों) ने सुख के दिन कभी नहीं देखे है अपितु वसुधैव कुटुम्बकम् के भाव से परिपूरित आशावादी है क्योंकि उनके हृदय में प्राणिमात्र के लिए प्रेमभाव है।

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

मानव संस्कृति एक ऐसी संस्कृति है जिसका लोप होने पर समग्र संस्कृति का निर्माण व विकास अवरूद्ध हो जाता है। नवीन संस्कृति के निर्माण हेतु आंचलिक संस्कृतियाँ पृष्ठभूमि का कार्य करती है और वैसे भी मानव का सामाजिक जीवन वहाँ की भौगोलिक स्थिति और वातावरण से विशेष रूप से प्रभावित होता है। भूमि (धरती) का भौगोलिक वातावरण का संस्कृति के निर्माण में मुख्य स्थान है। जीवन का उद्भव विकास धरती से ही होता है।

स्थानगत विशेषतायें व्यक्ति के खान–पान, नृत्यगान, रहन–सहन, वेश–भूषा, बोली–भाषा को प्रभावित करती है। अतः इन्हें संस्कृति का नियामक तत्व माना जाता है।

आंचलिक (स्थानीय) बोली, भाषा, सभ्यता, संस्कृति मिलकर राष्ट्रीय संस्कृति का निर्माण करती है।'' आंचलिक भाषाओं में ही देश की सभ्यता एवं संस्कृति स्वाभाविक रूप से विद्यमान रहती है।

उत्तराखण्ड के सांस्कृतिक आधार, उसकी विशिष्टताओं और विभिन्नताओं को रेखांकित करना वर्तमान जनभावनाओं के परिप्रेक्ष्य में एक सामाजिक आवश्यकता है। जहाँ एक और हिमालय की स्थूल विराटता, दुर्गमता और धवल शुभ्रता के समक्ष आदमी अस्तित्व का बौनापन और जीवन की क्षणभंगुरता प्रत्यक्ष हो जाती है, वहीं दूसरी ओर हिमालय की दिव्यता, भव्यता और सुचिता से मनुष्य की चेतना और व्यापक हो जाती है। हिमालय अमरत्व, शिवत्व और चिर सौन्दर्य का सांस्कृतिक बिम्ब है। एक विद्वान के शब्दों में ''हिम मंडित हिमालय पर दृष्टि पड़ते ही आदमी अपने भीतर परम सत्ता की अनुभूति स्वतः और सहजता से करने लगता है। भारत जब देवात्मा हिमालय की कल्पना करता है तो वह देवात्मा हिमालय उत्तरांचल होता है जो भगवान शिव का घर है, पार्वती (नंदा) का मायका है। भारतीय सभ्यता की जीवनधारा गंगा–यमुना की स्रोत स्थली है।

इस महिमामण्डित देवधाम हिमालय से जब हम यथार्थ की जमीन पर उतरते हैं तो हाड़–मांस और रक्त का वह पहाड़ी दिखाई देता है। जिसके लिए हिमालय दुर्गमता, विकटता, भीषण–जंगल, बीहड़ रस्तों, चट्टानों व पत्थरों को तोड़ती–चीरती नदियां, हिंसक और दुर्दान्त पशुओं का पर्याय है। प्रकृति और भाग्य से शताब्दियों से संघर्ष करते हुए बेहद कर्मठ और स्वाभिमानी सामान्य पहाड़ी के लिए हिमालय भावना नहीं अपितु रात–दिन की अनुभूति है।

उत्तरांचल हमारे देश में एक विशिष्ट प्रकार की सांस्कृतिक विरासत वाला क्षेत्र है। भारतीय संस्कृति को देव संस्कृति भी कहा जाता है। इसमें मनुष्य का मनुष्यता को, आदर्शनिष्ठ बनाये रखने के लिए हर स्तर पर प्रखर दर्श और विवेक संगत परम्पराओं का ऐसा क्रम बनाया गया है कि मनुष्य सहज रूप में ही प्रगति तथा सद्गति का अधिकारी बन सके। मनुष्य का हित मात्र जानकारियों से नहीं होता। वह बार–बार भूलता है और स्मरण करते हुए भी अनेक बातें चरितार्थ नहीं कर पाता है। इस हेतु सतत् स्मरण रखने या नियमित रूप से अभ्यास करने के लिए व्यवस्था बनायी गयी है। इसी परिप्रेक्ष्य में व्यक्तिगत स्तर पर उपासना, साधना, स्वाध्याय एवं मनन–चिन्तन के क्रम बनाये गये। पारिवारिक स्तर पर श्रेष्ठ गुणों के विकास तथा उत्तरदायित्वों के पालन का वातावरण बनाये रखने के

eISSN 2581-8996
ONLINE
THE INTERNATIONAL JOURNAL OF ADVANCED RESEARCH IN MULTIDISCIPLINARY SCIENCES (IJARMS)
A BI-ANNUAL, OPEN ACCESS, PEER REVIEWED (REFEREED) JOURNAL
Vol. 2, Issue 02, May 2019

लिए षोडश संस्कारों का ताना–बाना बुना गया। इस प्रकार परिवार की सीमायें आगे बढ़ते हुए ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' तक विकसित होती चली गयी।

व्यक्ति और परिवार के बाद विश्व की तीसरी इकाई है– 'समाज' जिस प्रकार ''व्यक्तिगत'' को परिष्कृत करने के लिए पूजा–उपासना तथा पारिवारिक रीति–नीति को उत्कृष्ट बनाये रखने के लिए संस्कार प्रक्रिया है, ठीक इसी प्रकार समाज को समुन्नत–सुविकसित बनाने के लिए सामूहिकता, परमार्थ–परायणता तथा लोकमंगल जैसी सत्प्रवृत्तियाँ विकसित करनी पड़ती हैं। साधना के व्यक्तित्व, संस्कारों से परिवार और पर्वो से समाज का स्तर ऊँचा बनाने तथा सामाजिक स्थिरता को बनाये रखने में हमारे सांस्कृतिक पर्व एवं त्यौहारों का हजारों वर्षो से निरन्तर योगदान रहा है।

संदर्भ सूची

1. स्कन्दपुराणान्तर्गत मानसखण्ड : पृ0सं0 19
2. डॉ0 दिनेशचन्द्र बलूनी, उत्तरांचल : संस्कृति, लोकजीवन, इतिहास एवं पुरातत्व, पृ0सं0 17–25
3. लोक संस्कृति के विविध आयाम मध्य हिमालय के सन्दर्भ में।
4. देव सिंह पोखरिया – कुमाऊँनी संस्कृति, अध्याय पाँच, पृ0सं0 1–2
5. डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा– भोजपुरी लोकगाथा (सत्यव्रत सिन्हा)– भूमिका से